www.bindiya.net.in

मई, 2013 ₹25

बिंदिया

सबकी पसंद

बिंदिया वार्षिकी

साथ में बिंदी का उपहार

5 वें साल में प्रवेश
आम और खास
पाठकों के साथ

एक्सक्लूसिव इंटरव्यू

बेस्ट ऑफ बिंदिया

सेलिब बाइट्स

मदर्स डे
पर विशेष

बंद समाज का
दरवाजा खोलतीं
खवातीन

चेहरा जलाने में
खौफ क्यों?

बचके रहें
एमबीए मर्दों से

समर फैशन

3 डी की गिरफ्त
में लड़कियां

सुहाती नहीं
बीवी की सहेलियां

वीडियो
से कमाई

कथानक : सेक्सुआलिटी की खोज

कवर गर्ल : शालू जिंदल

मिलिए कवर गर्ल शालू जिंदल से

पारंपरिक लाल बिंदी व सुनहरे रंग की कांजीवरम साड़ी में लिपटी सौम्य नजाकत-नफासत हैं हम सबकी पसंद। कवर गर्ल शालू जिंदल से एक मुलाकात।

"नृत्य के जरिए हम भगवान शिव, गणपति और कृष्ण को अपने पास बुलाते हैं। पैर थिरकते हुए महसूस होता है कि भगवान मेरे समीप हैं, मुझ पर अपना आशीष बरसा रहे हैं।"

दीप्ति अंगरीश

» आपकी नजरों में महिला सशक्तिकरण कितनी महत्वपूर्ण है? इस प्रक्रिया में आप क्या व कैसी भूमिका निभा रही हैं?

(जमीन से जुड़ी सुप्रसिद्ध कुचिपुड़ी नृत्यांगना शालू जिंदल ने सहज स्वभाव से अभिवादन किया और साक्षात्कार आरंभ हुआ।) (गंभीर मुद्रा में) आजादी मिले आज 66 साल बीत गए हैं, लेकिन महिलाओं की स्थिति में खासा बदलाव नहीं आया है। आज भी उन्हें इज्जत की निगाह से नहीं देखा जाता। ताज्जुब है कि हमारे देश में नारी की पूजा होती है। मां स्त्री-पुरुष की जन्मदाता है। फिर मां, एक स्त्री के प्रति गैरत भरा व्यवहार क्यों? यह जानकर तहेदिल से दुख होता है। स्त्री चाहती है कि वह समाज में सिर उठाकर जी सके। इज्जत, सम्मान उन्हें शिक्षा से ही मिल सकता है। पढ़ाई सिर्फ किताबी ज्ञान से ही नहीं आता सामाजिक तौर-तरीके ज्ञान का विस्तार करते हैं। जहां-जहां पर एजुकेशन प्रसार है वहां स्थिति अनुकूल है। वहां महिलाओं को इज्जत दी जाती है। गांवों, दूर-दराज के इलाकों में जहां शिक्षा का विस्तार व विकास दूरगामी है, वहां स्थिति प्रतिकूल है। लड़कियों के प्रति भेद-भाव किया जाता है। इन जगहों में महिलाओं की इज्जत में रद्दी की टोकरी में स्थान पाती है। खान-पान, पढ़ाई-लिखाई में दोहरा व्यवहार किया जाता है। लड़कियों को पढ़ाया नहीं जाता। उन्हें घर के काम में लगाना या शादी करना बेहतर समझा जाता है। इसे हमें ही बदलना होगा। नर-नारी, दोनों

"सुबह का समय मेरा पूजा, योग, नृत्य के लिए निश्चित रहता है। दोपहर का समय मैं बच्चों के साथ बिताती हूं। शाम से रात तक का समय मैं अपनी संस्था को देती हूं।"

को आगे आना होगा। हम सब को मिलकर शिक्षा, लोगों की मानसिकता को बदलना होगा। हमें लोगों को, महिला सशिक्तकरण के लिए जागरूक करना होगा। आज के दौर में बीए, बी.कॉम की डिग्री पर्याप्त नहीं है। इस डिग्री के बल पर पैसा अर्जित करना मुश्किल है। उन्हें आर्थिक रूप से पुष्ट करना हेगा, ताकि पैसों के लिए वे किसी के आगे हाथ न फैलाएं। इसके लिए हमारी संस्था फ्लैग फाउंडेशन (छत्तीसगढ़, ओड़िसा में कार्यान्वित) दूर-दराज से लड़के-लड़कियों को प्रेरित करती है, ताकि वे पढ़ाई-लिखाई के आलावा वोकेशनल ट्रेनिंग लें। सिलाई, मिस्त्री, बिजली आदि के ट्रेनिंग के बाद स्वयं के लिए रोजगार अर्जित कर पाएं।

» क्या नृत्य का क्षेत्र विशेषकर लड़कियों के लिए चुनौती भरा है? यदि वे शास्त्रीय संगीत, भारतीय नृत्य को अपनाएं तो किन बिंदुओं को जेहन में रखें?

काफी हद तक मैं आपकी बात से सहमत हूं। आज की युवा पीढ़ी का शास्त्रीय नृत्य की अपेक्षा वेस्टर्न डांस में रुझान है। जैज, हिप-हॉप, बॉलीवुड में पैसा है, इसे अपनाकर वे पैसा अर्जित कर सकते हैं। (चिंतन की मुद्रा में) हमारे खेमे में पैसा जीवन यापन के लिए पर्याप्त नहीं है। यही नहीं, आज शास्त्रीय नृत्य करने वाले कम हैं, उनकी कला को सराहने वाले दर्शक भी लेशमात्र रह गए हैं। इसके लिए विभिन्न राज्य सरकारों व केंद्र सरकार को इस कला को बचाना होगा, अन्यथा यह कला आने वाली पीढ़ी के लिए उपयोगी जानकारी भर रह जाएगी। सरकार को कला-संस्कृति के लिए अलग बजट का आवंटन करना चाहिए। तभी हमारा शास्त्रीय नृत्य जीवित रह सकता है। कुछ महीनों में दिल्ली में नृत्य आकादमी खोलने जा रहे हैं। यहां लड़के-लड़कियों को निःशुल्क शास्त्रीय नृत्य सिखाया जाएगा, ताकि इसे आगे वे लोगों को सिखाएं।

» कुचिपुड़ी नृत्य आपका जुनून है?

कुचिपुड़ी नृत्य में नृत्य व नाटक का मिश्रण है। हम भगवान के लिए नृत्य करते हैं। यह नृत्य उत्तम कलाप्रवीणता का प्रदर्शन करता है। इसमें नर्तकी जटिल तालबद्ध पैटर्न के साथ तालमेल बिठाकर, पीतल की थाली के किनारों पर नृत्य करके, जटिल फुटवर्क का प्रदर्शन करती है। जिस समय नर्तकी पीतल की थाली के किनारों पर खड़ी होती है, उस समय नर्तकी की आत्मा का संबंध भौतिक संसार से कट जाता है और वह अनन्त शक्ति के साथ सद्भाव में लीन हो जाती है। यह आत्मा का परमात्मा से मिलन का समय होता है। नृत्य के जरिए हम भगवान शिव, गणपति, कृष्णा को अपने पास बुलाते हैं। पैर थिरकते हुए महसूस होता है कि भगवान मेरे समीप हैं। मुझ पर अपना आशीष बरसा रहे हैं।

» पांच साल बाद कहां होंगी हमारी शालू जिंदल?

(हंसते हुए) मैं चाहती हूं कि कुचिपुड़ी नृत्य को उत्तर भारत में प्रचारित-प्रसारित करूं। देश-विदेश के लोग (खासतौर से युवा पीढ़ी) कुचिपुड़ी सीखें।

» आपकी शादी कैसी रही? नवीन जी से कब, कैसे मिलीं?

(शर्माते हुए) हमारी शादी एक सीधी, सरल माता-पिता की रजामंदी वाली शादी थी। दोनों परिवारों का एक मित्र ने आपस में परिचय करवाया। ऐसे में रीति-रिवाज अपनाने में कोई दिक्कत नहीं आई। शुरुआत में कठिनाइयां आईं। मसलन मैं एकल परिवार से थी और नवीन संयुक्त परिवार से। मैं खुले विचारों की हूं और ससुराल पक्ष पारंपरिक विचारों वाले। खैर, समय के साथ दोनों पक्षों ने समझौता किया। याद है मुझे आज भी, मेरे ससुर ने कहा था, 'बहुएं हमारे घर आती हैं और हम बदल जाते हैं। हमारी सोच, मानसिकता में बदलाव आता है।' आज नवीन-शालू आपके सामने हैं।

» रिश्तों को बखूबी निभाना आपसे सीखना चाहिए। आज तक हमने आप व नवीन जी के बारे में कुछ अटपटा नहीं सुना। इसका रहस्य क्या है?

पति-पत्नी का रिश्ता प्यार, विश्वास, भरोसे की नींव पर टिका होता है। यही हमारे रिश्ते का आधार स्तंभ है। नवीन जी कहते हैं कि रिश्ते की नींव में बेपनाह प्यार होना चाहिए। लेकिन प्यार की सीमा में तारतम्य होना चाहिए। न अधिक, न कमतर। दोनों ही स्थितियां रिश्ते की नींव के लिए घातक हैं। यह सिर्फ नवीन जी का ही नहीं मशहूर विचारक खलिल जिब्रान का भी मानना है। अधिक सामीप्य व दूरी बेहद बुरी है। रिश्ता डगमगा भी सकता है।

e-mail: deepti.angrish@gmail.com

नाम - शालू जिंदल
शिक्षा - ग्रेजुएशन (अर्थशास्त्र), डिप्लोमा (इंटीरियर डिजाइन, बिजनेस मैनेजमेंट)
शौक - सेल्फ हेल्प की किताबें पढ़ना
रंग - लाल
फूड - थाई फूड
वेज/नॉन वेज - खालिस वेज
गाने - पुराने नगमें (किशोर कुमार, रफी, लता जी)
फिल्में - हॉलीवुड फिल्में देखना पसंद है
ड्रीम डेस्टिनेशन - थाईलैंड
कॉस्मेटिक - केनीबो ब्रांड
शॉपिंग - सिर्फ फैब इंडिया या गुड अर्थ से
नापसंद - झूठ
जीवन मंत्र - जिंदगी का कोई भी पल व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। हर पल को सार्थक बनाने में तत्पर रहना चाहिए।